गुरु नानक – सबद २४

पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥

जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ५

पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥
ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात ॥
सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु ॥
लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु ॥
नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु ॥२२॥

सार: बहुल की अवधारणा एक अनंत, निरंतर और विस्तारित ब्रह्मांड का वर्णन करती है जिसमें कई दुनिया, आयाम और अस्तित्व के स्तर शामिल हैं। यह विचार ब्रह्मांड में विविधता की भव्यता, विशालता और जटिलता पर ज़ोर देता है, जिसकी विशिष्टता और परस्पर संबंध, समझ से बाहर है।

पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥
अनगिनत अनजान इलाक़े और लाखों अज्ञात स्थान और दायरे हैं।

ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात ॥
वेदों से पता चलता है कि कई लोग सृष्टि की विशालता को उजागर करने के प्रयास में स्वयं खो हो गए हैं।

सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु ॥
कतेब (सामी ग्रंथ) का दावा है कि असल में अट्ठारह हज़ार ब्रह्मांड हैं। हालाँकि, वास्तव में, स्रोत एक ही है।

लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु ॥
अगर कोई सृष्टि की विशालता का दस्तावेज़ीकरण करने का प्रयास करता है, तो यह असंभव होगा, क्योंकि इसे लिखने के प्रयास में नष्ट भी हो सकता है।

नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु ॥२२॥
नानक कहते हैं कि प्रबुद्ध वो लोग हैं जो अपने अस्तित्व के प्रति सचेत हैं, के वह एक, सर्वव्यापी, अदृश्य चेतना का हिस्सा हैं। (२२)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि सच्ची महानता आत्म-जागरूकता में ही है, यह पहचानना कि हम स्वयं एक मात्र, सर्वव्यापी, अदृश्य चेतना का एक हिस्सा ही हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com